ISSN (Print) : 2320 – 3765
ISSN (Online): 2278 – 8875

International Journal of Advanced Research in Electrical, Electronics and Instrumentation Engineering

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization) | Impact Factor: 1.342|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

Vol. 3, Issue 9, September 2014

स्वामी विवेकानंद के राष्ट्रवाद एवं लोकतंत्र संबंधी विचारों की प्रासंगिकता

Dr. Sucheta Gupta

Lecturer, Department of Political Science, Government College Bibirani, (Alwar) Rajasthan, India

सारांश: स्वामी विवेकानंद के जन्म को डेढ़ सदी बीत चुकी है, लेकिन आज भी उनके संदेश युवाओं के लिए जोड़ा का स्त्रोत बने हुए हैं। संपूर्ण राष्ट्र के भविष्य की दिशा तय करने में भी उनके विचार निर्णायक भूमिका का निर्वहन करने की क्षमता रखते हैं। आज वेदांत दर्शन को विज्ञान की मान्यता मिलने लगी है, जिससे स्वामी जी के विचार और भी प्रासंगिक हो गए हैं। स्वामी जी प्रखर राष्ट्रवाद के प्रबल समर्थक थे। उनका मानना था कि राष्ट्र के प्रति गौरव बोध से ही राष्ट्र का कल्याण होगा। हिंदू संस्कृति, समाज सेवा, चरित्र निर्माण, शिक्षा, देशभक्ति, व्यक्तित्व तथा नेतृत्व के विषय में स्वामी जी के विचार को वर्तमान परिवेश में अधिक मान्यता मिल रही है। उन्होंने अपने वेदांत के उपदेशों में हिंदू धर्म के अध्यात्मवाद को पुनः जीवित किया और हिंदू धर्म की श्रेष्ठता को स्थापित किया। उन्होंने जाति प्रथा की जटिलता, परिवर्तनशीलता और बंधनों का विरोध किया। स्वामी जी ने युवाओं का आह्वान करते हुए कहा था कि निराशा, कमजोरी, आलस और इर्ष्या युवाओं के सबसे बड़े शत्रु हैं। उनका संदेश था कि आने वाले भारत का भविष्य युवाओं के कार्यशैली पर ही निर्भर करेगा। संभवतः यह उनकी राष्ट्रगत दूरदर्शिता ही थी कि 150 वर्षों की लंबी यात्रा के बाद आज भी 21 वीं शताब्दी युवा भारत की अपेक्षाओं और आकांक्षाओं का प्रत्यक्ष प्रमाण के रूप में हमारे सामने हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में स्वामी विवेकानंद के राष्ट्रवाद और लोकतंत्र संबंधी विचारों को विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्दः स्वामी विवेकानंद, राष्ट्रवाद, लोकतंत्र, राजनीतिक चिंतन।

I. प्रस्तावना

भारत की सोई हुई आत्मा को जगाने और उसमें स्वाभिमान की भावना जागृत कर मातृभूमि की रक्षा के लिए प्रेरित करने वाले भारत की आत्मा के सजग प्रहरी व युवा शक्ति के प्रति के विवेकानंद का जन्म कोलकाता के संपन्न परिवार में 12 जनवरी 1863 हुआ था। बचपन के उदंड व चंचल बालक में बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि और तर्कशिलता थी। तथा माता भुनेश्वरी देवी की धर्म परायणता व पिता विश्वनाथ दत्त जी की बौद्धिक प्रतिभा के कारण सहृदयता, सहानुभूति, ईश्वर भक्ति और अध्यात्मवृद्धि के गुण बचपन से ही उत्पन्न हुए थे, जो अनुकूल वातावरण पाकर निरंतर विकसित होते गए। सन 1981 के अंत में वे अपने संबंधी के साथ रामकृष्ण परमहंस के दर्शन करने दक्षिणेश्वर गए। इसके बाद स्वामी विवेकानंद ने उत्तर, पश्चिम और दक्षिण भारत के क्षेत्रों में भ्रमण किया। इस यात्रा के दौरान भारतीयों की गहरी दरिद्रता और दुख तथा पुरातन संस्थाओं का विघटन देखकर उनको घोर निराशा हुई और उनकी यह धारणा दृढ़ हो गई थी कि इसके निराकरण का एकमात्र उपाय धर्म का उदार करना है। 1893 में स्वामी जी संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में शिकागो में सर्व धर्म सम्मेलन में हिंदू धर्म के प्रतिनिधि के नाते सम्मिलित होने भारत से गए। उनके प्रथम भाषण से ही सम्मेलन के प्रतिनिधि और अमेरिकन जनता अत्यधिक प्रभावित हुई। इस भाषण में उन्होंने पहली बार पश्चिमी संचार के सामने संसार के सामने भारतीय धर्म और संस्कृति को प्रभावशाली व कारगर ढंग से प्रस्तुत किया। अमेरिका से भारत लौटने पर वे चाहते थे कि हिंदू धर्म की परंपरा और आध्यात्मिक विरासत को बनाए रखते हुए उसमें पाश्चात्य विश्व की समानता, स्वाधीनता और शक्ति की भावना को विकसित करना चाहिए। धर्म पर आधारित शिक्षा के द्वारा वह जनसाधारण को ऊंचा उठाना और नारी मुक्ति चाहते थे।

II. उपदेश व सिद्धांत

धर्म मनुष्य में निहित देवत्व विकास है। धर्म न तो ग्रंथों में है ना धार्मिक सिद्धांतों में पर वह व्यक्ति की केवल अनुभूति में निवास करता है। विवेकानंद ने ईश्वर के साकार और निराकार दोनों स्वरूपों का प्रतिपादन किया। उन्होंने प्राचीन धर्म ग्रंथों और शास्त्रों की पवित्रता को माना है तथा वेदांत के सिद्धांतों का प्रचार किया। उन्होंने मानव की सेवा को वास्तविक ईश्वर उपासना माना। जनकल्याण और

ISSN (Print) : 2320 – 3765
ISSN (Online): 2278 – 8875

International Journal of Advanced Research in Electrical, Electronics and Instrumentation Engineering

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization) | Impact Factor: 1.342|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

Vol. 3, Issue 9, September 2014

दीन दुखियों की सेवा पर उन्होंने अधिक बल दिया उनके अनुसार, भारत के पतन का एक कारण समाज के अधिकांश वर्गों का दमन है उन्होंने छुआछूत प्रथा का विरोध किया। वह दीन दुखियों, निर्धनों और अछूतों को दृढ़ता व ज्ञान की अवस्था से ऊंचा उठाना चाहते थे। स्वामी विवेकानंद ने भारतीय धर्म में संस्कृति की महानता पर बल देते हुए इस तथ्य को उजागर किया कि भारतीयों को पृथकता कि भावना त्याग देनी चाहिए। वे चाहते थे पश्चिम देश भारत की आध्यात्मिकता को अपनाएं उनके अनुसार पश्चात्य देशों में आध्यात्मिक और धार्मिक विचारों के अभाव में वैज्ञानिकों के कारण जो भौतिक प्रगति हो रही है वह उन देशों के लिए अनिष्टकारी है। वे भारत की स्वाधीनता और भौतिक प्रगति को विश्व की उन्नति व विकास के लिए आवश्यक मानते थे।

III. राष्ट्रवादी दृष्टिकोण

दुनिया में हिंदू धर्म और भारत की प्रतिष्ठा स्थापित करने वाले स्वामी विवेकानंद ने एक आध्यात्मिक हस्ती होने के बावजूद युवाओं के दिलों में अमिट छाप छोड़ी। वे सदा युवकों को राष्ट्रीयता की शिक्षा देते जो युवक अपने देश को प्यार नहीं करता उसे नवयुवक नहीं कहा जा सकता। भगवान राम और कृष्ण ने राष्ट्र के कल्याण के लिए ही अपना जीवन अर्पित किया। स्वामी विवेकानंद ने अपनी ओजपूर्ण से हमेशा भारतीय युवाओं को उत्साहित किया। उनके उपदेश आज भी संपूर्ण मानव जाति में शक्ति का संचार करते हैं उनके अनुसार किसी भी इंसान को असफलताओं के धूल के समान घटकर खरीदना चाहिए तभी सफलता उनके करीब आती है। स्वामी जी के अनुसार आमिर को किसी भी परिस्थिति में अपने लक्ष्य से भटकना नहीं चाहिए। युवाओं के लिए स्वामी जी का कहना था कि 'पहले अपने शरीर को लिस्ट बनाओ, मैदान में जाकर खेलो कसरत करो ताकि स्वस्थ शरीर से धर्म अध्यात्म ग्रंथों में बताए गए आदर्शों में आचरण कर सको। आज जरूरत है ताकत और आत्मविश्वास, शक्ति और अदम्य मनोबल की जो आप में होनी चाहिए तभी भारत को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराकर पूर्ण सुदृढ़ और आत्मनिर्भर भारत की कल्पना की जा सकती है विवेकानंद जी ने एक पत्र के माध्यम से भारतीय संस्कृति और धर्म का जन जन में प्रचार प्रसार के लिए युवाओं का आह्वान किया। अब हमारे सामने यह समस्या है स्वाधीनता के बिना किसी प्रकार की उन्नति संभव नहीं है। हमारे पूर्वजों ने धार्मिक चिंता में हमें स्वाधीनता दी थी और उसी से हमें आश्चर्यजनक बल मिला है पर उन्होंने समाज के पैर बड़ी-बड़ी जंजीरों से जकड़ा दिए और उसके फलस्वरुप हमारा समाज थोड़े शब्दों में यदि कहें तो यह भयंकर और पौष्टिक हो गया। दूसरों को हानि ना पहुंचाते हुए मनुष्य को विचार और उसे व्यक्त करने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए एवं उसे खानपान, पोशाक, पहनावा, विवाह-शादी हर एक बात में स्वाधीनता मिलनी चाहिए। 'भारत को उठना होगा शिक्षा का विस्तार करना होगा बुराइयों को एक ऐसा धक्का देना होगा कि वह टकराती हुई अटलांटिक महासागर में जा गिरे, ब्राह्मण हो या सन्यासी किसी की भी बुराई को क्षमा नहीं मिलनी चाहिए। अत्याचारों का नामोनिशान ना रहे सभी को अधिक सुलभ हो किंतु यह व्यवस्था धीरे-धीरे लानी होगी। अपने धर्म पर अधिक जोर देकर और समाज को स्वाधीनता देकर यह करना होगा प्राचीन धर्म से पुरोहित की बुराइयों को हटा दो तभी तुम्हें संसार का सबसे अच्छा धर्म मिल पाएगा मुझे विश्वास है कि यह संभव है और एक दिन ऐसा जरूर होगा।

विवेकानंद का राष्ट्रवाद आध्यात्मिक साम्राज्यवाद था उन्होंने तरुण भारत को प्रेरित किया कि, वह भारत के आध्यात्मिक उद्देश्यों में विश्वास रखें। उनके दर्शन के आधार पर आगे चलकर उन बुद्धिजीवियों के परंपरा राष्ट्रवाद का निर्माण हुआ, जो अपने वर्गों से संबंध विच्छेद कर चुके थे और जिन्होंने अपने को गुप्त समुदायों के रूप में संगठित किया तथा ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने के लिए हिंसा और आतंक का समर्थन किया। उनका यह कार्य उनके इस प्रबल विश्वास का कि भविष्य में धर्म ही भारत का मेरुदंड बनेगा। वह इस अर्थ में पुनर्नवादि थे वह भारत के अतीत का आह्वान कर भविष्य के भारत का निर्माण करना चाहते थे। वह भारत राष्ट्र की महत्ता एवं एकता के पोषक थे तथा सभ्यता को आंतरिक ईश्वर की अभिव्यक्ति मानते थे। उनका राष्ट्रप्रेम भारत माता के चित्र में समाहित था। बंकिम की तरह उन्होंने भी भारत को जननी के रूप में देखा था। वे उग्र राष्ट्रवाद के पक्षपाती थे और इसी कारण से उन्होंने भगिनी निवेदिता को आक्रामक हिंदूवाद का उपदेश दिया। भगिनी निवेदिता ने आक्रामक हिंदूवाद को उग्रवादी आंदोलन में प्रयुक्त किया। उनके द्वारा राष्ट्रीय उन्नति एवं जागरण के लिए दिया गया सशक्त आज भी भारतीयों के लिए प्रेरणादायक है। विवेकानंद ने कहा था हाष्ट्र के रूप में हम अपना व्यक्तित्व विस्मृत कर बैठे हैं और यही इस देश में सब दुश्मनों की जड़ है। हमें देश को उसका खोया हुआ अस्तित्व वापस देना है और जनता का उत्थान करना है। हिंदू, मुसलमान और ईसाई सभी ने उसको अपने पैरों से कुचला है किंतु उसके उठाने की शक्ति भी अंतराल से आनी चाहिए। अर्थात परंपरा हिंदू समाज में से प्रत्येक देश में जो बुराइयां देखने को मिलती है वह धर्म के कारण नहीं बल्कि धर्म गिरोह के कारण है। इसलिए दोष धर्म का नहीं है मनुष्य का है। स्वामी विवेकानंद ने जिस प्रकार एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था को प्रस्तावित किया जो कि पूर्व की आध्यात्मिक संस्कृति एवं पश्चिम की धर्मनिरपेक्ष उन्नति का समन्वित रूप थी। भारत में स्वामी विवेकानंद राष्ट्रवाद के बढ़ते हुए ज्वार के प्रतीक बन गए। उनका प्रभाव भारत में एक नई चेतना का उद्बोधन तथा विश्व के लिए उद्वेलन का कारण बना।

ISSN (Print) : 2320 – 3765
ISSN (Online): 2278 – 8875

International Journal of Advanced Research in Electrical, Electronics and Instrumentation Engineering

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization) | Impact Factor: 1.342|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

Vol. 3, Issue 9, September 2014

स्वामी विवेकानंद का चिंतन वसुधैव कुटुंबकम में विश्वास करते थे। वे राष्ट्रीय राज्य की सीमाओं से ऊपर उठकर सोचते थे। विश्व प्रेम का संदेश है उनकी महत्वपूर्ण दिन है विवेकानंद अंतरराष्ट्रवादी थे। विश्व बंधुत्व के समर्थक थे। विश्व धर्म महासभा में उनका अंतरराष्ट्रीयवाद का भाव उभर कर आया जहां अन्य सब प्रतिनिधि अपने अपने धर्म की चर्चा करते रहे। वही केवल विवेकानंद ने सबकी धर्म व ईश्वर की बात की विवेकानंद का संदेश भारत से असीम प्रेम था किंतु उनको किसी धर्म या जाति से गिला नहीं थी वे कहा करते थे "मुझे भारत से प्यार है और प्रत्येक दिन मेरी दृष्टि अधिक निर्मल होती जा रही है, हमारे लिए भारत या इंग्लैंड और अमेरिका क्या है? हम तो ईश्वर के जड़ में पानी देने वाला क्या सारे वृक्ष को नहीं उगाता है?

लोकतांत्रिक व्यवस्था के संदर्भ में विचार
स्वामी विवेकानंद का विचार था कि हमारा लोकतांत्रिक राज्य जो अपने नागरिकों की सामूहिक इच्छाओं के एक औजार या यंत्र के रूप में कार्य करता है और जिसमें प्रशासन राज्य के कार्यों का प्रमुख यंत्र है। इस यंत्र को कमजोर और थोथा ना होने दें। समस्त प्रशासनिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का यही प्रयोजन है यही उनका मुख्य उद्देश्य और प्रयोजन होना चाहिए। एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में प्रशासनिक भ्रष्टाचार तत्वों से उत्पन्न होती है। तकनीकी ज्ञान में पूर्णता, राष्ट्रीय लालसा और आशाओं का गहरा ज्ञान तथा उसमें संभावित एक तर्कसंगत समर्पण का भाव और समान भाव से कठिन परिश्रम करने की क्षमता है। उनका मानना था कि प्रशासन को राष्ट्र के भौतिक संसाधनों का महज संचालन कर संतुष्ट हो जाने की अपेक्षा राष्ट्र के विशाल मानव संसाधनों को संगठित एवं गतिशील बनाने तथा सामान्य नागरिक को देश के विकासात्मक कार्यों में शामिल करने के योग्य बनाती है। भारत का मानव संसाधन जो केंद्र और राज्यों में तथा गांव के निचले स्तर तक हमारे अव्यवस्थित प्रशासनिक तंत्र में फैला हुआ है, उसे देश के बाकी मानव संसाधन को क्रियाशील करने के लिए एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में विकसित करने की जरूरत है ताकि राष्ट्र का सर्वांगीण विकास किया जा सके।

मनुष्य के विकास के संबंध में विवेकानंद का दृष्टिकोण बड़ा व्यापक था यह मनुष्य के आध्यात्मिक विकास के लिए भारतीय ज्ञान एवं क्रियाओं को आवश्यक मानते थे। और उसके भौतिक एवं आर्थिक विकास के लिए पाश्चात्य ज्ञान विज्ञान एवं तकनीकी को आवश्यक मानते थे। आज तो ज्ञान किसी देश की सीमा में सीमित नहीं है आज तो ज्ञान के क्षेत्र में भूमंडलीकरण हो गया है और उसके भौतिक एवं अतिथि विकास के लिए पश्चात ज्ञान विज्ञान एवं तकनीकी को आवश्यक मानते थे।

स्वामी विवेकानंद केवल आध्यात्मिक शिक्षक ही नहीं थे अपितु भारतीय समाज एवं राष्ट्र की अनेक समस्याओं को हल करने का मार्ग भी उन्होंने प्रस्तुत किया। उनका विचार था कि भारत की पिछड़ी हुई स्थिति के लिए शिक्षा की कमी बहुत हद तक उत्तरदाई था। उनका मानना था कि शिक्षा में किसी प्रकार का बाहरी दबाव नहीं होना चाहिए शिक्षकों अथवा माता-पिता को बालकों पर अनावश्यक दबाव नहीं डालना चाहिए और उनके विकास को उन्मुक्त छोड़ देना चाहिए। स्वामी जी के समय में भारत पर अंग्रेजों का राज्य था और सजग भारतीय देश को स्वतंत्र कराने का प्रयास कर रहे थे। स्वामी जी केवल शांत ही नहीं बल्कि देश के प्रसिद्ध नेता भी थे और उन्होंने ऐसी शिक्षा प्रणाली अपनाने की सलाह दी जिससे गुलामी का जुआ उतारा जाए। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि हमारे देश के अदम्य संकल्प और लोगों की आवश्यकता है। देश में मनुष्य निर्माण करना चाहते थे, उनके अनुसार हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो अधिक से अधिक बालक बालिकाओं को मनुष्य बनाएं। एक प्रकार से मनुष्य निर्माण उनका मिशन था। यही कारण है कि स्वामी जी ने भारतीय धर्म तथा संस्कृति के मूलभूत स्तंभ पर शिक्षा का मनोवैज्ञानिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। उन्होंने गरीबों, दुखियों की सेवा और उन्नति के लिए अपने विचारों और कार्यों से भारतीयों में भारतीय भारतीयों में राष्ट्रीय भावना जागृत की। और भारत को राष्ट्रीय सेवा के लिए प्रेरित किया। विवेकानंद के अनुसार, 'भारत को शीघ्र ही स्वतंत्र होना चाहिए क्योंकि स्वतंत्र भारत मानवता के उत्थान और उधार के लिए अधिक सबल और समर्थक होगा। भारतीयों को स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए निडर होकर कार्य करने की प्रेरणा दी। विवेकानंद के संबंध में रविंद्र नाथ टैगोर का कथन है यदि कोई भारत को समझना चाहता है तो उसे विवेकानंद के जीवन और कार्यों का अध्ययन करना चाहिए।

IV. निष्कर्ष

देश की आध्यात्मिक चेतना के साथ-साथ राष्ट्रवाद तथा लोकतांत्रिक भावनाओं के विकास में अपना वरिष्ठ कंधा लगाने वाले महर्षि विवेकानंद का नाम विशेष रूप से स्मरणीय है। महर्षि विवेकानंद ने जनता को आलस्य, अकर्मण्यता के स्थान पर परिश्रम और कर्म रहता का पाठ पढ़ाया। इसमें कोई संदेह नहीं कि स्वामी विवेकानंद ने आधुनिक आदर्श समाज के निर्माण में महान भूमिका अदा की थी। स्वामी जी ने धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद जनता को ऊंचा उठाना और जन शक्ति, नारी शक्ति, अस्पृश्यता उन्मूलन, समाजसेवा,

ISSN (Print) : 2320 – 3765
ISSN (Online): 2278 – 8875

International Journal of Advanced Research in Electrical, Electronics and Instrumentation Engineering

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization) | Impact Factor: 1.342|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

Vol. 3, Issue 9, September 2014

हिंदू मुस्लिम एकता, विश्वव्यापी साक्षरता और अनौपचारिक शिक्षा क्षेत्रों में वह आधुनिक भारत के निर्माण में योगदान दिया। स्वामी विवेकानंद ने राष्ट्र के पुनरुत्थान का दायित्व वैसे तो हिंदू धर्म को सौंपा लेकिन उनका विश्वास था कि जात पात. आस्था, धर्म इत्यादि के पीछे जिस मनुष्य का अस्तित्व पाया जाता है वह किसी भी तरह के भेदभाव को स्वीकार नहीं करता। उन्होंने सच्चे मानववाद और विश्व बंधुत्व के आदर्शों को बढ़ावा दिया। जहां उन्होंने एक और भारत को पहचानते विज्ञान और प्रकृतिवाद अपनाने के लिए कहा वहीं दूसरी ओर ब्रह्मचर्य और आध्यात्मिक के प्राचीन आदशों को शिक्षा में प्रमुख स्थान दिया। युवक-युवतियों के लिए पाठ्यक्रम निर्धारित करते समय उन्होंने साहस आत्मविश्वास एकाग्रता अनासक्ति तथा उच्च नैतिक चरित्र के गुण निर्माण करने पर विशेष रूप से ध्यान दिया। उन्होंने शिक्षकों को सलाह देने के कार्य को व्यवसाय बनाकर एक मिशन के रूप में लेने की सलाह दी। उन्होंने सब वही संतुलित और सामने वादी दृष्टिकोण रखा स्वामी विवेकानंद ने भारतीय धर्म तथा संस्कृति के मूलभूत स्तर पर शिक्षा का मनोवैज्ञानिक तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया।

संदर्भ सूची

1. अमिया पी सेन, (2003), स्वामी विवेकानंद, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली।
2. विवेकानंद साहित्य, (1989), खंड 5, आश्रम मायावती।
3. राजेंद्र प्रसाद गुप्त, (1997), स्वामी विवेकानंद व्यक्ति और विचार, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
4. रोमॉ रोलों, (1965). दी लाइफ ऑफ रामकृष्ण, आदित्य आश्रम, कोलकाता।
5. शिकागो वक्तृत, (1975), स्वामी विवेकानंद, श्री राम कृष्ण आश्रम, नागपुर।
6. स्वामी विवेकानंद, (1966), मॉडर्न इंडिया, कंपलीट वर्क, भाग 41
7. विश्व प्रकाश, (2005), मानवता के शिल्पी गीता से गांधी तक, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
8. स्वामी विवेकानंद, संक्षिप्त जीवनी तथा उपदेश, स्वामी अपूर्वानंद, रामख्रष्ण मठ, नागपुर।
9. रामनाथ शर्मा, (1971), भारतीय शिक्षा दर्शन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
10. स्वामी विवेकानंद, (1993), मेरे भारत जागो, रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन, बेलूर मठ।
11. बी पी बर्मा, (1982), आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा।
12. विलियम रेडी, (1998), स्वामी विवेकानंद एंड मॉर्डनाइजेशन ऑफ हिंदी, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली।